आपो हि ष्ठा मयोभुवः

जनवरी 2015

संरक्षक
राजदेव सिंह

मुख्य संपादक
डॉ. मनमोहन गोयल

परामर्शदाता
डॉ. जयवीर त्यागी
डॉ. सुधीर कुमार
डॉ. एस.डी. खोब्रागड़े
डॉ. एस.पी. राय

संपादक
डॉ. रमा मेहता

सह संपादक
प्रदीप कुमार उनियाल
पवन कुमार शर्मा

प्रकाशक
राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान,
जलविज्ञान भवन, रूड़की-247667
उत्तराखंड

मुद्रक
राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान,
रूड़की के लिए
सी.एस.आई.आर.-राष्ट्रीय विज्ञान
संचार एवं सूचना स्रोत संस्थान
डॉ. के. एस. कृष्णन् मार्ग,
नई दिल्ली द्वारा मुद्रित!

जल चेतना

सम्पादकीय

तकनीकी पत्रिका ''जल चेतना'' का जनवरी 2015 अंक सुधी पाठकों को सौंपते हुए हमें अत्यंत प्रसन्नता हो रही है। आशा है कि यह अंक हर वर्ग के पाठकों को रोचक एवं उपयोगी लगेगा। प्रायः यह कहा जाता है विज्ञान एवं तकनीकी विषयों पर हिंदी में लिखना दुष्कर कार्य है परंतु इस तरह के प्रकाशन कार्य इस तर्क को झूठा साबित कर देते हैं। संस्थान का प्रयास है कि इस पत्रिका के माध्यम से वैज्ञानिक एवं तकनीकी विषयों से जुड़ी विभिन्न जानकारियों को जनसाधारण तक पहुंचाया जाए जिससे समाज का हर वर्ग जल संबंधी शोध कार्यों की नित नई जानकारियों का लाभ उठा सके। अभी तक संस्थान सामान्य तौर पर जल एवं जलविज्ञान से जुड़े विभिन्न विषयों की जानकारियों को अंग्रेजी भाषा के माध्यम से जन साधारण तक पहुंचाता रहा है। परंतु अब यह संस्थान पिछले चार वर्षों से इन महत्वपूर्ण जानकारियों को हिंदी भाषा के माध्यम से जन-जन तक पहुंचा रहा है। संस्थान ने प्रयास किया है कि विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संबंधित विषयों की जानकारियों के साथ-साथ जल चेतना में जल सम्बन्धी ऐसे लेखों को भी सम्मिलित किया जाए जिनका जनसाधारण के जीवन से कोई न कोई सरोकार अवश्य हो। यह ध्यान रखा गया है कि लेखों की भाषा सरल व सुबोध हो तथा जिन्हें हर वर्ग के पाठक आसानी से समझ सकें।

इस अंक में ''क्या है गंगा कार्य योजना'', ''महानगरीय गांवों में जल संकट'', ''नर्मदा : मध्य भारत की जीवन रेखा'', ''जल संकट से बचने के लिए अनिवार्य है जल संरक्षण'', ''भारतवर्ष में जल संसाधन प्रबंधन के क्षेत्र में प्रमुख समस्याएं एवं समाधान'' इत्यादि जैसे रोचक एवं जनोपयोगी लेखों का समावेश किया गया है। पानी से संबंधित तकनीकी जानकारी के अतिरिक्त कुछ अन्य रोचक विषयों जैसे कि ''भैया, ये प्यास बुझती क्यों नहीं'', ''पानी बीमा : एक सुरक्षित निवेश'', ''भारतीय वाङ्मय में प्रकृति संरक्षण की अवधारणा'' इत्यादि पर भी लेख शामिल किये गये हैं।

विगत एक दशक से देश में जल की उपलब्धता एवं गुणवत्ता से संबंधित समस्याओं में काफी बढ़ोतरी हुई है। इसका प्रमुख कारण जनसाधारण को जल के संबंध में पर्याप्त जानकारी का न होना है। अतः इस पत्रिका के माध्यम से जल से संबंधित महत्वपूर्ण एवं उपयोगी जानकारियों को जन सामान्य तक पहुंचाना ही हमारा परम उद्देश्य है ताकि आने वाले समय में पानी के दुरूपयोग को कम किया जा सके तथा इसकी निरन्तर गिरती हुई गुणवत्ता पर विराम लगाया जा सके। जन-जागरूकता अभियान एवं प्रचार-प्रसार की दृष्टि से यह पत्रिका भारत सरकार की ओर से निःशुल्क वितरित की जा रही है। अतः जो भी सुधी पाठक इस पत्रिका को मंगवाना चाहते हैं वे इस पत्रिका के अंत में दिये गये सदस्यता फार्म को भरकर इसे सम्पादक के नाम पर भेजने का कष्ट करें ताकि उनका नाम सदस्यता सूची में शामिल किया जा सके।

सम्पादक मंडल उन समस्त विद्वत लेखकों का आभारी है जिन्होंने इस पत्रिका के लिए अपने रोचक एवं उपयोगी लेख देकर हमारा उत्साहवर्धन किया है। जल चेतना के इस अंक में जिन स्रोतों से चित्रों का संकलन किया गया है, संपादक मंडल उन सभी का हार्दिक आभार प्रकट करता है।

पत्रिका के प्रकाशन में हमें राष्ट्रीय विज्ञान संचार एवं सूचना स्रोत संस्थान (सी.एस.आई.आर) नई दिल्ली के पदाधिकारियों ने भरपूर सहयोग प्रदान किया है, इसके लिये हम हृदय से उन सभी का आभार प्रकट करते हैं।

हमें विश्वास है कि यह पत्रिका पाठकों को अत्यंत रोचक तथा उपयोगी लगेगी। पत्रिका के आगामी अंकों को और आकर्षक बनाने तथा सामग्री एवं साज-सज्जा में सुधार लाने के लिए समस्त सुधी पाठकों के सुझाव आमंत्रित हैं।

मूल्य : निःशुल्क
शिकायत : 01332-249228, 249201
ई-मेल : jalchetna44@gmail.com

सम्पादकीय : 01332-249262, 249228,
फैक्स : 01332-272123
ई-मेल : **jalchetna44@gmail.com**
वेब साइट : **www.@nih.ernet.in**

© राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान
पत्रिका में प्रकाशित आलेख एवं रचनाओं में प्रस्तुत तथ्य लेखकों के अपने विचार हैं, संपादक मंडल एवं संस्थान का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।
पत्रिका से सम्बन्धित सभी विवाद रुड़की न्यायालय द्वारा ही निपटाए जायेंगे।